हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 357 कानपुर, बुधवार 23 अगस्त-2023 पृष्ठ -8

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम :डॉ अनिल कुमार

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 × 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी ।उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। डॉ सिंह ने बताया कि अंतर फसल के रूप में धनिया, कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी ।डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है ।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

निर्विरोध प्रदेश अध्य ने भव्य स्वाग

कानपुर। उत्तर प्रदेश राइस अध्यक्ष बनने पर सिंहपुर स्थित स्वागत में सकैडो कार्यकर्ताओ जिलाध्यक्ष कृष्ण मुरारी शुक्ला वाहनों के काफिले के साथ इस विंध्यवासिनी पेट्रोल पंप पर वै शुक्ला, अनुज त्रिपाठी, रोहित रिषी दिवेदी ने स्वागत किया। दौरान इनके काफिले के साथ भदौरिया, कमेन्द पाण्डेय, अति ने स्वागत कर फूल मालाओ से चौबेपुर अमिताभ त्रिपाठी, उत्त सलिल दीक्षित , पंकल त्रिवेदी

टमाटर में प्रचुर मात्रा में मिलता है कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने मंगलवार को टमाटर की खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इसके अलावा टमाटर में कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। उन्होंने किसानो को टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 × 60 सेंटीमीटर रखने तथा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी।उन्होंने टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताते हुए कहा कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करनी चाहिए। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी। डॉ.सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान प्राप्त कर सकते है।

खेतों में मेड़ बनाकर करें टमाटर की रोपाई, बढ़ेगी पैदावार

❑ टमाटर में पाया जाता है कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम व आयरन

डॉ. अनिल कुमार सिंह

कानपुर, 22 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉ. सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 × 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी।उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। डॉ सिंह ने बताया कि अंत फसल के रूप में धनिया, कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी।डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम समय- डॉ0 अनिल

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेटए विटामिनए कैल्शियमए आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक पिगमेंट पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटी ऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 ग 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है।

अधिकतम तापमान 33.00° >> न्यूनतम तापमान 28.00° >> सूर्योदय 5:30 >> सूर्यास्त 18:56 >> डॉलर 82.26 >> यूरो

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम समयः डॉ अनिल

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 x 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। डॉ सिंह ने बताया कि अंतः फसल के रूप में धनिया,कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

मंगलवार

22 अगस्त, 2023

अंक - 17

अगस्त महीना टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम समयः डॉक्टर अनिल कुमार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 22 अगस्त 2023 को प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 × 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी।उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में

बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है। डॉ सिंह ने बताया कि अंत- फसल के रूप में धनिया,कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी।डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

एक नजर में

सीएसएवि को हस्तांतरित होगी 15.69 हेक्टेयर भूमि

कानपुर : मेट्रो रेल परियोजना के लिए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा दी गई भूमि की भरपाई राज्य सरकार ने कर दी है। मंगलवार को कैबिनेट में कृषि विभाग की 15 .69 हेक्टेयर भूमि विश्वविद्यालय को निश्शुल्क हस्तांतरित करने से जुड़े प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। यह भूमि कृषि प्रक्षेत्र बिधनू में स्थित है, जो लोअर गंगा कैनाल के किनारे कानपुर-हमीरपुर मार्ग पर है। मेट्रो सब स्टेशन बनाने के लिए विश्वविद्यालय की नवाबगंज की 14 .06 हेक्टेयर भूमि दी गई थी। जासं

मेघों ने ख
अंबर से

शहर से बरखा की बे
सुबह से ही बूंदों की
दोपहर बाद नीले आस
सूरज क्षितिज में जाक
शाम होते ही मेघों ने अ
दी और अंबर से खुशि
रह-रहकर बूंदों की ल
कुल 24 मिलीमीटर ब
चार डिग्री सेल्सियस
30.4 और न्यूनतम ता

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 55 कानपुर, बुधवार 23 अगस्त 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम : अनिल कुमार

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट विटामिन कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है। इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं। डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 × 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी।उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है। जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत

अच्छी होती है। डॉ सिंह ने बताया कि अंत- फसल के रूप में धनिया,कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं। जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है। उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें। जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी।डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम समय..डॉक्टर अनिल कुमार सिंह

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(संजय मौर्य,मीनाक्षी सोनकर)
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 22 अगस्त 2023 को प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है।

टमाटर में काबोहांइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है।

इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं

विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है। जिससे सर्दियों की शुरूआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं।

डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 ७ 60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है।

टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है।

जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है।

डॉ सिंह ने बताया कि अंतः फसाल के रूप में धनिया,कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं।

जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है।

उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें।

जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी।

फल स्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी।

डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।

लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है।

शहर दायरा न्यूज

कानपुर, बुधवार 23 अगस्त 20

अगस्त माह टमाटर की रोपाई का सर्वोत्तम-डॉ अनिल कुमार

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में प्रसार निदेशालय के उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की खेती के बारे में बताया कि टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी है टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन तथा खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं इसके फल में लाइकोपीन नामक वर्णक (पिगमेंट) पाया जाता है जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट बताया जाता है इन सबके अतिरिक्त कैरोटिनॉइड्स एवं विटामिन सी भी टमाटर में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं डॉक्टर सिंह ने बताया कि टमाटर की रोपाई का सबसे उचित समय अगस्त का महीना होता है जिससे सर्दियों की शुरुआत में टमाटर निकलना शुरू हो जाते हैं डॉ अनिल कुमार सिंह ने टमाटर की रोपाई पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60×60 सेंटीमीटर रखने को कहा पौध रोपाई के बाद सिंचाई कर देने की सलाह दी उन्होंने कहा कि यदि मेड बनाकर टमाटर की रोपाई किसान भाई करते हैं तो सिंचाई जल एवं स्थान का उचित उपयोग हो जाता है टमाटर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के बारे में बताया कि कुदाल या खुरपी से निराई करना हितकर होता है जिससे पौधों की जड़ों में वातायन होता है और फलत अच्छी होती है डॉ सिंह ने बताया कि अंत फसल के रूप में धनिया,कद्दू वर्गीय, गोभी वर्गीय फसलें ली जा सकती हैं जिन से अतिरिक्त आय से लाभ होता है उन्होंने कहा कि रोग और कीड़ों से मुख्य फसल को बचाने के लिए पर्यावरणीय अभियंत्रण के अंतर्गत खेत के चारों तरफ एवं प्रत्येक 10 लाइन मुख्य फसल के बाद एक लाइन गेंदा की रोपाई करें जिससे कि कि मादा कीट मुख्य फसल को छोड़कर गेंदा के पौधों पर अपना अंडा रखेगी। फलस्वरुप टमाटर की फसल में होने वाली क्षति कम होगी।डॉ सिंह ने बताया कि टमाटर की औसत उपज 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर होती है।लेकिन अच्छी उत्पादन तकनीक व उन्नत प्रजातियां अपनाने से 800 से 1000 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज किसान भाइयों को प्राप्त हो सकती है